❍ 19 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा की ?*

➢➢ *किसी भी बात में संशय तो नहीं उठाया ?*

➢➢ *परमात्म चिंतन के आधार पर सदा बेफिक्र रहे ?*

➢➢ *सबकी दुआएं प्राप्त कर संतुष्टता का अनुभव किया ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *जैसे कपड़े सिलाई करने का साधन धागा होता है, वैसे ही भविष्य सम्बन्ध जोड़ने का साधन है आत्मिक स्नेह रुपी धागा।* जोड़ने का समय और स्थान यह है। *लेकिन यह ईश्वरीय स्नेह वा आत्मिक स्नेह तब जुड़ सकता है जब अनेक देहधारियों से स्वार्थ का स्नेह समाप्त हो जाता है।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं साक्षी स्थिति द्वारा श्रेष्ठ पार्ट बजाने वाली आत्मा हूँ"*

〰✧ सभी सदा साक्षी स्थिति में स्थित हो हर पार्ट बजाते हो? साक्षीपन की स्टेज कायम रहती है? कभी साक्षी के बजाए पार्ट बजाते-बजाते पार्ट में साक्षीपन की स्टेज को भूल तो नहीं जाते। *जो साक्षी होगा वह कभी भी किसी पार्ट में चलायमान नहीं होगा। न्यारा होगा, प्यारा भी होगा। अच्छे में अच्छा, बुरे में बुरा ऐसे नहीं होगा।*

〰✧ साक्षी अर्थात् सदा हर कार्य करते हुए कल्याण की वृति में रहने वाले। जो कुछ हो रहा है उसमें कल्याण भरा हुआ है। *अगर कोई माया का विघ्न भी आता तो उसमें भी लाभ उठाकर, शिक्षा लेकर आगे बढ़ेगें रुकेगे नहीं।*

〰✧ ऐसे हो? सीट पर बैठकर खेल देखते हो। साक्षीपन है सीट। इस सीट पर बैठकर ड्रामा देखो तो बहुत मजा आयेगा। *सदा अपने को साक्षी की सीट पर सेट रखो, फिर वाह ड्रामा वाह। यही गीत गाते रहेंगे!*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

⁺˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⁺˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

⁺˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *जैसे मन को जहाँ जिस स्थिति में स्थित करना चाहो वहाँ सेकण्ड में स्थित हो जाओ।* ऐसे नहीं ज्यादा टाइम नहीं लगा, 5 सेकण्ड लग गये, 2 सेकण्ड लग गये। ऑर्डर में तो नहीं हुआ, कन्ट्रोल में तो नहीं रहा।

〰✧ *कैसी भी परिस्थिति हो, हलचल हो लेकिन हलचल में अचल हो जाओ।* ऐसे कन्ट्रोलिंग पॉवर है? या सोचते-सोचते अशरीरी हो जाऊँ, अशरीरी हो जाऊँ, उसमें ही टाइम चला जायेगा? कई बच्चे बहुत भिन्न-भिन्न पोज बदलते रहते, बाप देखते रहते।

〰✧ सोचते हैं अशरीरी बनें फिर सोचते हैं अशरीरी माना आत्मा रूप में स्थित होना, हाँ, मैं हूँ तो आत्मा, शरीर तो हूँ ही नहीं, आत्मा ही हूँ। मैं आई ही आत्मा थी, बनना भी आत्मा है। *अभी इस सोच में अशरीरी हुए या अशरीरी बनने में युद्ध की?*

⁺˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

⁺˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *बापदादा सदा हर्षित, सदा हद के आकर्षणों से परे अव्यक्त फ़रिश्तों को देख रहे हैं। यह फ़रिश्तों की सभा है।* हर फ़रिश्ते के चारों ओर लाइट का क्राउन कितना स्पष्ट दिखाई देता है अर्थात् हर फ़रिश्ता लाइट-हाउस और माइट-हाउस कहाँ तक बना है- यह आज बापदादा देख रहे हैं। *जैसे भविष्य स्वर्ग की दुनिया में सब देवता कहलायेंगे वैसे वर्तमान समय संगम पर फ़रिश्ते समान सब बनते हैं लेकिन नम्बरवार। जैसे वहाँ हर एक अपनी स्तिथि प्रमाण सतोप्रधान होते हैं वैसे यहाँ भी हर पुरुषार्थी फ़रिश्तेपन की स्टेज को प्राप्त ज़रूर करते हैं।* तो आज बापदादा हर एक की रिजल्ट को देख रहे थे। क्योंकि अब अन्तिम रियलाइजेशन कोर्स चल रहा है। रियलाइजेशन कोर्स में हर एक अपने आपको कहाँ तक रियलाइज कर रहे हैं? तो रिजल्ट में दो विशेष बातें देखीं। वह कौन सी? हर एक किस पोजिशन तक पहुँचे हैं? ऑपोजिशन ज़्यादा है अथवा पोजिशन की स्टेज ज्यादा हैं? दूसरा - पुरानी देह और पुरानी दुनिया से स्मृति को कहाँ तक ट्रॉन्सफर किया है? साथ-साथ ट्रान्सफर के आधार पर ट्रांसपेरेंट कहा तक बने हैं? चारों ही सब्जेक्टस में कहाँ तक प्रैक्टिकल स्वरूप बने हैं? बापदादा के तीनों स्वरूप- साकार, आकार और निराकार द्वारा ली हुई पालना और पढ़ाई का रिटर्न कहाँ तक किया है? आदि से अब तक जो बापदादा से वायदे किये हैं उन सब वायदों को निभाने का स्वरूप कहाँ तक है? *फ़रिश्तेपन की लास्ट स्टेज की निशानी है- सदा शुभ चिन्तक और सदा निश्चिन्त। ऐसे बने हो? रियलाइजेशन कोर्स में स्वयं को रियलाइज करो और अब अन्तिम थोड़े-से पुरुषार्थ के समय में स्वयं में सर्व शक्तियों को प्रत्यक्ष करो।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- पढ़ाने वाला स्वयं शिवबाबा है इस निश्चय में रहना"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा रूपी गोपिका जन्म जन्मान्तर से ढूंढ रही अपने मुरलीधर को सामने पाकर अलौकिक सुखों के नशे में डूब जाती हूँ... *वो हर पल मेरी ऊँगली पकड मेरे संग-संग चल रहा है, माया के छल में फिर से फंसने से पल पल बचा रहा है...* ऐसे मुरलीधर की मधुर मुरली का रस पान करने मैं आत्मा गॉडली स्टूडेंट बन सेण्टर में बाबा के सामने बैठ जाती हूँ...

❉ *प्यारे बाबा रूहानी पाठशाला में नर से नारायण बनने की शिक्षा देते हुए कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... कितने महान भाग्यशाली हो... *जिस ईश्वर पिता को दर दर खोज रहे थे... आज वह पिता, टीचर, और सतगुरु रूप में सम्मुख मौजूद है...* और साधारण नर से श्रेष्ठतम नारायण बना रहा है... अपने इस बेमिसाल भाग्य के नशे में गहरे डूब जाओ..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा परमात्मा को अपने सामने हाजिर नाजिर पाकर धन्य धन्य होती हुई कहती हूँ:-* "हाँ मेरे प्यारे बाबा... मैं आत्मा अपने महान भाग्य को देख देख पुलकित हूँ और खुशियो में झूम रही हूँ... प्यारा भगवान मुझे यूँ सहज मुफ़्त में मिल गया... *मेरा भाग्य सदा का खुबसूरत हो गया... यह गीत में धरती अम्बर में गुनगुना रही हूँ..."*

❉ *मीठे बाबा निश्चय बुद्धि विजयंती का पाठ पक्का कराते हुए मुझसे कहते हैं:-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... सोचा था कल्पनाओ में भी कभी... कि भगवान यूँ बैठ पढ़ायेगा, ज्ञान रत्नों से सजाएगा, और हाथ में हाथ लिए अपने मीठे घर को ले जायेगा... फिर अनन्त सखो से भरी दनिया में राज्याधिकार दिलाएगा... *ऐसे

भाग्य को पाने वाले खुबसूरत देवता हो... सदा इस निश्चय में निश्चिन्त रहो..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा ईश्वर को पाकर, पाना था सो पा लिया का गीत गुनगुनाती हुई कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... *मै आत्मा ईश्वर पिता को ही सतगुरु रूप पाकर दुनियावी गुरुओ से मुक्त हो गई हूँ...* देह के हर नाते से उपराम होकर ईश्वरीय यादो में खोती जा रही हूँ... और अपने देवताई स्वरूप की यादो में रोमांचित हो रही हूँ... मीठे बाबा आपको पाकर मैंने सब कुछ पा लिया है..."

❇ *प्यारे बाबा गॉडली गोल्डन गिफ्ट के स्टॉक से मुझे भरपूर करते हुए कहते हैं:-* "मेरे सिकीलधे मीठे बच्चे... ईश्वर पिता ने स्वयं अपनी पलको से चुना है और अपनी निराली पाठशाला का फूल बनाया है... इस महानतम नशे को रग रग में समालो... *ईश्वर स्वयं पिता, टीचर और सतगुरु बन पालना कर रहा... ज्ञान रत्नों से झोली भर कर सदा का मालामाल कर रहा है... सदा इस निश्चय में अटल रहो..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा निश्चय बुद्धि बन प्यारे बाबा की गोदी में निश्चिन्त होकर सुखों का अनुभव करते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा न जाने कौन से पुण्य से आज भगवान को पा गई हूँ... मीठे बाबा आपने हर भटकन से छुड़ाकर, कदमो तले सुखो के फूल बिछाए है... और श्रीमत के हाथो में जीवन कितना महफूज कर दिया है... *मै आत्मा ईश्वरीय पालना में कितनी सुखी और निश्चिन्त हो गयी हूँ..."*

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- किसी भी बात में संशय नही उठाना है*"

➳ _ ➳ इस सृष्टि रूपी विशाल रंगमंच पर चलने वाली सीन सीनरियो को देखने की इच्छा से अपने लाइट के सूक्ष्म आकारी शरीर के साथ मैं फ़रिशता अपने साकारी शरीर से बाहर निकलता हूँ और सृष्टि रूपी भू लोक की सैर करने चल पड़ता हूँ। *धरती के आकर्षण से परे काफी ऊंचाई से मैं फ़रिशता धरती के चारों ओर का नजारा अपनी आंखों से स्पष्ट देख रहा हूँ*। इतनी ऊंचाई से देखने पर भू लोक का नज़ारा ऐसे लग रहा है जैसे मैं कोई बहुत बड़ा मंच देख रहा हूँ, जिस पर कोई ड्रामा अथवा नाटक चल रहा है। इस वैरायटी ड्रामा में वैरायटी एक्टर्स को वैरायटी पार्ट प्ले करते हुए मैं देख रहा हूँ।

➳ _ ➳ कोई गरीब है, कोई अमीर है। कोई दुखी है, कोई सुखी है। कोई हंस रहा है, कोई रो रहा है। कोई अत्याचार कर रहा है, कोई उस अत्याचार को सहने के लिए विवश है। *ये सब दृश्य देख कर मन मे विचार आता है कि सभी एक समान क्यो नही है! क्यो कोई दुखी और कोई सुखी है*! मन मे उठ रही इस दुविधा का हल जानने के लिए मैं फ़रिशता पहुंच जाता हूँ सूक्ष्म वतन अपने बाबा के पास। सूक्ष्म वतन में पहुंचते ही एक विचित्र दृश्य मुझे दिखाई देता है। मैं देख रहा हूँ सामने एक विशाल पर्दा है जिस पर वो सब सीन चल रही है जो मैं देखते हुए आ रहा था। जिसे देख कर मन मे विचार उठ रहे थे कि ऐसा क्यों? *लेकिन मैं देख रहा हूँ कि बाबा भी यही सब दृश्य यहाँ बैठ कर स्पष्ट देख रहें है लेकिन बाबा के चेहरे पर कोई दुविधा नही। बल्कि मुस्कराते हुए बाबा हर दृश्य को देख रहें हैं*।

➳ _ ➳ तभी उस पर्दे पर और भी भयानक मंजर दिखाई देता है। कहीं बाढ़ के कारण तबाही का दृश्य, तो कहीं भूकम्प के कारण गिरती हुई बड़ी बड़ी बिल्डिंग, कही बॉम्ब फटने से तबाह होते शहर, कहीं गृह युद्ध। लाशों के ढेर लगे हैं, लोग चीख रहें हैं, चिल्ला रहे हैं लेकिन बाबा के चेहरे पर अभी भी वही गुह्य मुस्कराहट देख कर मैं हैरान हो रहा हूँ। *बाबा मेरे मन की दुविधा जान कर अब मेरे पास आते हैं और मुझ से कहते हैं, बच्चे:- "त्रिकालदर्शी की सीट पर सेट हो कर ड्रामा की हर सीन को देखोगे तो कभी कोई संदेह या प्रश्न मन मे पैदा नही होगा"*। अब बाबा मेरा हाथ पकड़ कर मुझे अपने पास बिठा लेते हैं और मास्टर त्रिकालदर्शी भव का वरदान दे कर, तीन बिंदियो की स्मृति का अविनाशी तिलक मेरे मस्तक पर लगा कर मझे अपनी सर्वशक्तियों से भरपर

कर देते हैं।

➳ _ ➳ सर्वशक्ति सम्पन्न स्वरूप धारण करके, मस्तक पर तीन बिंदियो की स्मृति का अविनाशी तिलक लगाये अब मैं फ़रिशता वापिस साकारी दुनिया मे लौट रहा हूँ और फिर से अपने साकारी तन में प्रवेश कर रहा हूँ। किन्तु *अब मेरे मन मे कोई संदेह, कोई प्रश्न नही। ड्रामा की हर सीन को अब मैं साक्षी हो कर देख रही हूं*। त्रिकालदर्शी की सीट पर सेट हो कर ड्रामा की हर एक्ट को देखने से अब हर एक्ट एक खेल की भांति प्रतीत हो रही है और मनोरंजन का अनुभव हो रहा है।

➳ _ ➳ सृष्टि के आदि, मध्य, अंत के राज को जानने और स्वयं को केवल एक्टर समझ कर पार्ट बजाने से अब मैं हर फिक्र से मुक्त हो, बेफिक्र बादशाह बन जीवन का आनन्द ले रही हूं। *इस बात को अब मैं सदा स्मृति में रखती हूं कि इस विश्व नाटक में कोई किसी का मित्र/शत्रु नही है*। सभी पार्टधारी है और सभी अपना पार्ट एक्यूरेट बजा रहें हैं इसलिए क्या,क्यो और कैसे के सब सवालों से स्वयं को मुक्त कर, किसी भी बात में संशय ना उठाते हुए साक्षीदृष्टा बन इस सृष्टि ड्रामा में अपना पार्ट बजा रही हूं।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं परमात्म चिंतन के आधार पर सदा बेफिक्र रहने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं निश्चयबुद्धि, निश्चिन्त आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदा सन्तुष्टता का अनुभव करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव सबकी दुआएं लेती रहती हूँ ।*
✺ *मैं सन्तुष्टमणि हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ आप लोगों ने देखा होगा कि होली में भिन्न-भिन्न रंगों के,सूखे रंग, थालियां भरकर रखते हैं। तो वतन में भी जैसे सूखा रंग होता है ना - ऐसे बहुत महीन चमकते हुए हीरे थे लेकिन बोझ वाले नहीं थे, जैसे रंग को हाथ में उठाओ तो हल्का होता है ना! ऐसे भिन्न-भिन्न रंग के हीरों की थालियां भरी हुई थी। तो जब सब आ गये, तो *वतन में स्वरूप कौन सा होता है, जानते हो? लाइट का ही होता है ना! देखा है ना! तो लाइट की प्रकाशमय काया तो पहले ही चमकती रहती है।* तो बापदादा ने सभी को अपने संगमयुगी शरीर में इमर्ज किया। जब संगमयुगी शरीर में इमर्ज हुए तो एक दो में बहुत मिलन मनाने लगे। एडवांस पार्टी के जन्म की बातें भूल गये और संगम की बातें इमर्ज हो गई। तो आप समझते हो कि *संगमयुग की बातें जब एक दो में करते हैं तो कितनी खुशी में आ जाते हैं।* बहुत खुशी में एक दो से लेन-देन कर रहे थे। बापदादा ने भी देखा - यह बड़े मौज में आ गये हैं तो मिलने दो इन्हों को। आपस में अपने जीवन की बहुत सी कहानियां एक दो को सुना रहे थे, *बाबा ने ऐसा कहा, बाबा ने ऐसे मेरे से प्यार किया, शिक्षा दी। बाबा ऐसे कहता है, बाबा-बाबा. बाबा-बाबा ही था।*

➳ _ ➳ कुछ समय के बाद क्या हुआ? सबके संस्कारों का तो आपको पता है। तो सबसे रमणीक कौन थी इस ग्रुप में? (दीदी और चन्द्रमणी दादी) तो दीदी पहले उठी। चन्द्रमणी दादी का हाथ पकड़ा और रास शुरू कर दी। और दीदी जैसे यहाँ नशे में चली जाती थी ना,वैसे नशे में खूब रास किया। मम्मा को बीच में ठहराया और सर्किल लगाया, एक-दो-को आंख मिचौनी की, बहुत खेला और *बापदादा भी देख-देख बहुत मुस्करा रहे थे।* होली मनाने आये तो खेलें भी। कुछ समय के बाद *सभी बापदादा की बांहों में समा गये और सब एकदम लवलीन हो गये और उसके बाद फिर बापदादा ने सबके ऊपर भिन्न-भिन्न रंगों के जो हीरे थे, बहुत महीन थे, जैसे किसी चीज का चूरा होता है ना, ऐसे थे। लेकिन चमक बहुत थी तो बापदादा ने सबके ऊपर डाला।* तो चमकती हुई बाडी थी ना तो उसके ऊपर वह भिन्न-भिन्न रंग के हीरे पड़ने से बहुत सभी जैसे सज गये। लाल, पीला,हरा... जो सात रंग कहते हैं ना। तो सात ही रंग थे। तो बहुत *सभी ऐसे चमक गये जो सतयुग में भी ऐसी ड्रेस नहीं होगी।* सब मौज में तो थे ही। फिर एक दो को भी डालने लगे। रमणीक बहनें भी तो बहुत थी ना। बहुत-बहुत मौज मनाई।

➳ _ ➳ मौज के बाद क्या होता है? *बापदादा ने इन एडवान्स सबको भोग खिलाया,* आप तो कल भोग लगायेंगे ना लेकिन बापदादा ने मधुबन का, संगमयुग का भिन्न-भिन्न भोग सबको खिलाया और उसमें विशेष होली का भोग कौन-सा है? (गेवर-जलेबी)आप लोग गुलाब का फूल भी तलते हैं ना। तो *वैरायटी संगमयुग के ही भोग खिलाये। आपसे पहले भोग उन्होंने ले लिया है,* आपको कल मिलेगा। अच्छा। मतलब तो बहुत मनाया, नाचा, गाया। सभी ने मिलके वाह बाबा, मेरा बाबा, मीठा बाबा के गीत गाया। तो नाचा,गाया, खाया और लास्ट क्या होता है? बधाई और विदाई।

➳ _ ➳ तो आपने भी मनाया कि सिर्फ सुना? *लेकिन पहले अभी फरिश्ता बन प्रकाशमय काया वाले बन जाओ।* बन सकते हो या नहीं? मोटा शरीर है? नहीं। सेकण्ड में *चमकता हुआ डबल लाइट का स्वरूप बन जाओ।* बन सकते हो? बिल्कुल फरिश्ता! (बापदादा ने सभी को ड्रिल कराई) अभी *अपने ऊपर भिन्न-भिन्न रंगों के चमकते हुए हीरे सक्ष्म शरीर पर डालो और सदा ऐसे दिव्य

गुणों के रंग,शक्तियों के रंग, ज्ञान के रंग से स्वयं को रंगते रहो। और सबसे बड़ा रंग बापदादा के संग के रंग में सदा रंगे रहो। ऐसे अमर भव।*

✺ *ड्रिल :- "वतन में एडवान्स पार्टी की आत्माओं के संग होली मनाने का अनुभव"*

➳ _ ➳ *साकारी देह में भृकुटि के भव्य भाल पर विराजमान चैतन्य शक्ति मैं आत्मा हूँ... भृकुटि के भव्य भाल पर चमकती प्रकाश की यह ज्योतिमय तेजस्वी मणि मैं आत्मा हूँ...* मैं आत्मा देख रही हूँ स्वयं को त्याग और तपस्या की महान पवित्र भूमि पाड़व भवन हिस्ट्री हाल में ज्ञान रत्नों से खेलते हुए... *ज्ञान के मोती चुगते हुए मनन की एक मगन अवस्था में मैं आत्मा स्थित हूँ...* तभी अचानक बाहर किसी के मोबाइल फ़ोन में रिंगटोन बजती है... *वो दिन कितने प्यारे थे जब बाबा साथ हमारे थे...* ये गीत सुनते ही मुझ आत्मा के नयन सजल हो जाते है... उठ कर मैं आत्मा इस हाल में लगे साकार बाबा के समय के चित्रों को देखने लग जाती हूँ... *एक-एक चित्र को बड़े ध्यान से देख रही हूं... अब भी वो गीत कानों में गूंज रहा है...* साकार बाबा किसी चित्र में बच्चों को टोली खिला रहा है... किसी चित्र में बाबा बच्चों के साथ ज्ञान चर्चा कर रहे हैं... एक चित्र में *बाबा बच्चों के साथ खेल रहे हैं...* इन चित्रों को देख आँखों से मोती बरसने लगते है... *एक-एक चित्र अद्वितीय है... अनमोल है...*

➳ _ ➳ इन्हें देख कर लग रहा है मानो मैं आत्मा इन पलों को जी रही हूं... *ये एक-एक चित्र खामोश होते भी बहुत कुछ कह रहा है... खामोश होते भी जैसे दिल को छू रहा है* और ये चित्र साकार दिनों की जैसे दिल में बहार ले आए हो जिस बहार में मैं आत्मा खिल उठी हूँ.... ध्यान से देख रही हूँ... *उन सभी महान आत्माओं को जिन्हें साकार पालना का सौभाग्य मिला... कितनी चमक कितना तेज है इन पवित्र आत्माओं के चेहरे पर...* तभी एक और चित्र सामने आता है जिसमें मम्मा के साथ और भी आत्माएं हैं... जो इस समय एडवांस पार्टी में जा चुके हैं... इस चित्र को देख लगता है *जैसे ये सभी मुझे देख मुस्कुरा रहे है और मुझे बुला रहे है... एक खींच सी मुझ आत्मा को हो रही हैं... मन ही मन बाबा से मीठी-मीठी बातें मैं आत्मा कर रही हूँ...* और साकार

दिनों की ये अनमोल पल बार-बार हवा के झोंके की तरह मानस पटल पर आ रहे है...

➳ _ ➳ एक सैलाब सा जैसे यादों का दिल में आ गया हो... *तभी मैं आत्मा मम्मा के चित्र को देखते हुए कहती हूँ आप कहां चली गई हैं... उन महान एडवांस पार्टी की आत्माओं को भी कहती हूँ आप सब कहां हैं...* कल होली के पर्व पर आप सब साथ होते तो कितना अच्छा होता... हम मिलकर होली खेलते... और *मीठे बाबा के चित्र की तरफ देख बड़े प्यार से कहती हूं, बाबा काश मैं आपके साथ सब आत्माओं के साथ फिर से वैसे खेल पाती उन साकार पलों का अनुभव कर पाती...* और आंसूओं की धाराएं आंखों से बहने लगती है तभी अचानक *बाबा से बहुत पावरफुल करंट अनुभव होती है... और मैं आत्मा अनुभव कर रही हूँ... जैसे मुझे कोई ऊपर की तरफ खींच रहा हो...* एक अजीब सी खींच महसूस हो रही है... मैं आत्मा नश्वर देह के निकल सूक्ष्म शरीर के साथ ऊपर उड़ने लगती हूँ... देख रही हूँ मैं आत्मा स्वयं को ऊपर की ओर उड़ते हुए... *देह और देह की दुनिया से ऊपर चांद तारों से ऊपर बादलों के बीच से होते हुए ऊपर की तरफ जा रही हूं...*

➳ _ ➳ स्पष्ट अनुभव हो रहा है जैसे मुझे कोई ऊपर की ओर खींच रहा हो... और अचानक मैं आत्मा रूक जाती हूँ... मैं आत्मा देख रही हूँ... *बापदादा सभी एडवांस पार्टी की आत्माओ के साथ सामने खड़े है... और मुझे देख कर सभी मुस्कुरा रहे हैं...* यह दृश्य देख कर मैं आत्मा खुशी में झूम उठती हूं... आँखें सजल हो जाती है... *बाबा और सभी महान आत्माएँ मुझे अपने पास बुलाती है...* मैं नन्हा फरिशता उड़कर सभी महान आत्माओं के पास पँहुच जाता हूँ... बापदादा सभी एडवांस पार्टी की आत्माओं के संगमयुगी शरीर को इमर्ज करते है... *सभी आत्माएँ एक-दो से अपने-अपने बाबा के साथ के अनुभव सुनाने लग जाते है... बाबा ना ऐसा कहते थे, बाबा ने ऐसे मेरे से प्यार किया, बाबा ने ऐसे शिक्षा दी... बस चारों ओर बाबा मेरा बाबा, मीठा बाबा यही गीत गूंज रहा हैं...* चारों तरफ खुशी की लहर आ गई है... मैं आत्मा खुशी में झूम रही हूँ... *मैं आत्मा जैसे साकार पलों को जी रही हूँ...* वाह बाबा वाह के गीत मैं आत्मा गा रही हूँ... तभी सभी एक-दो का हाथ पकड़ रास करने लगते है... *मम्मा मझ आत्मा का हाथ पकड मझे घमाती है और बहत मीठी दृष्टि देती

है... फिर मैं आत्मा सबके साथ आंख मिचौली खेलती हूँ , झुला झूलती हूँ...*

➳ _ ➳ बाबा चारों तरफ देखते हैं... *बाबा के देखते ही रंग-बिरंगे हीरे के चूरे से भरे थाल आ जाते है... बाबा हमारें ऊपर वो चूरा डालते है...* और हमें होली की बधाई देते है देख रही हूँ मैं आत्मा रंग-बिरंगे हीरों के चूरे से हम सबकी लाइट की ड्रेस अलग-अलग चमचमाते लाल, हरें, नीले, पीलें रंग के हीरों से सज जाती है... *चमकते हुए फरिशता ड्रेस पर ये रंग-बिरंगे हीरो की चमक ने इसे अद्भुत बना दिया है... सतयुग में भी ऐसी ड्रेस नहीं पहनेगे जो बाबा ने हम सबको अभी पहनाई...* फिर बाबा एक गोल्डन कलर की थाल सामने लाते हैं... जिसमें वैरायटी संगमयुगी भोग हैं... *मीठे बापदादा एक-एक कर हम सबको अपने हाथ से भोग खिला रहे है... वाह बाबा वाह कितना श्रेष्ठ सौभाग्य है मुझ आत्मा का जो साकार पालना का अनुभव करने का चांस मिला...* सभी वाह मेरा बाबा वाह के गीत गाते हुए मगन हो गये है गा रहे है नाच रहे है झूम रहे है... और एक दूसरे पर भी हीरों से बना चूरा डाल रहे है... तभी *बाबा हम सबको अपनी बाहों में समा लेते है... एकदम लवलीन अवस्था बस मैं और मेरा बाबा...* अब बाबा हम सभी को विदाई दे रहे है... ये अविस्मरणीय होली मना कर, इन अनमोल यादों को लिए फिर से मैं आत्मा साकारी दुनिया में वापिस आ जाती हूँ... मैं आत्मा देख रही हूँ स्वयं को साकारी दुनिया में कर्म करते हुए... *मैं आत्मा हर पल स्वयं को बापदादा के संग के रंग में रंगा हुआ अनुभव कर रही हूँ... मैं आत्मा अमर भव के वरदान का प्रेक्टिकल स्वरूप बन गयी हूँ...* मैं आत्मा सदा दिव्य गुणों के, दिव्य शक्तियों के, ज्ञान के रंग में रंग कर और जो भी आत्माएं सम्बन्ध-सम्पर्क में आ रही है *उन आत्माओं को भी इसी रंग में रंग रही हूँ... वे आत्माएँ भी अब अमर भव का वरदान अनुभव कर रही हैं... शुक्रिया लाडले बाबा शुक्रिया....*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔